P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय संस्कृति और समाज (कथाकार – मृदुला गर्ग के साहित्य संदर्भ में)

प्रियंका अरोड़ा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग,
कला संकाय
भगवत विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

राजेश कुमार शर्मा
शोध निर्देशक,
हिन्दी विभाग,
भगवत विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

हर समाज में बेरोजगारी, बीमारी तथा उच्च वर्ग और निम्नवर्ग में भिन्नता देखने को मिलेगी उसी वर्ग, जाति एवं लिंग भेद को लेकर महिला कथाकारों ने लिखा है। परपुरूषगमन की बात भी इनके साहित्य में है तो परस्त्रीगमन की चर्चा पुरूष सत्ता में विरोध में रहकर स्त्री को पुरूष की अधीनता से मुक्त कराने की कामना इन महिला कथाकारों की कहानियों/उपन्यासों में देखने को मिला है तथा पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति तथा विवाह जैसी संस्था को लेकर चर्चा की है।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में नारी का विशेष स्थान है। वैदिककाल से रामायण–महाभारत काल में नारी को सम्मान प्राप्त था। कालान्तर में समय परिवर्तन के साथ देश पर आक्रमण होते रहे, हूण, यहूदी, शक जातियों का प्रभाव रहा है। भारतीय संस्कृति में वेद–वेदांगों का विशेष महत्त्व रहा है। "यत्रस्तु पूज्यते नारी रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते है। विश्व के सबसे बड़े प्रजातन्त्र (भारत) में आज नारी की विशेष शोचनीय है। हमारे संविधान में नारी दशा को विशेष अधिकार प्राप्त होते हुए भी वह अधिकार विहीन सी प्रतीत होती है। वह माँ, पत्नी व पुत्री तीनों रूपों में अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह कर रही है।

मृदुला गर्ग हिन्दी की प्रख्यात महिला कथाकार के रूप में चर्चित है। इन्होंने कहानी, नाटक एवं उपन्यासों के माध्यम से भारतीय नारी की वस्तुस्थिति के यथार्थ को पाठकों के सामने उतारा है। आज देश को आजादी के 72 वर्ष पार करने पर भी स्त्री को वो अधिकार नहीं मिल पा रहे हैं जो कि सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से मिलने चाहिए। 'शतपथ ब्राह्मण' में नारी के दमन की बात कही है। ऐसा नहीं होने पर उसकी शक्ति क्षय होती है। 'एतरेय ब्राह्मण' के अनुसार नारी एक से अधिक पतिग्रहण नहीं कर सकती। एक पति के यदि कई पत्नियाँ हो, तब भी पत्नी के लिए एक ही पति श्रेष्ठ है। विडम्बना है कि प्राचीन काल से आज तक उस पर विविध प्रकार के सामाजिक दायित्व सौंपे हैं तथा उसके अधिकारों का हनन हुआ है। प्राचीन ग्रन्थों में सांस्कृतिक परम्पराओं, मर्यादा, आदर्श की स्थापना स्पष्ट दृष्टिगोचर है। आज का पुरूष स्त्री को गर्भधारण कर सन्तानोत्पत्ति की फैक्ट्री से अधिक नहीं मानता है।

मुख्य शब्द : संस्कृति, समाज, सम्मान, अधिकार, परम्परा, मर्यादा, अधिनता, स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

महाभारत में पाण्डवों के जुए में हार जाने पर द्रोपदी युधिष्ठिर से प्रश्न करती है। "धर्मराज जब जुए में स्वयं को हार गये तो फिर मुझे दांव पर लगाने का अधिकार उन्हें है? अर्थात् तत्कालीन समाज में युधिष्ठिर यदि स्वयं को हार न गए हो तो तो उन्हें द्रोपदी को दांव पर लगाने का अधिकार होता। लेखिका के रचनात्मक लेखन के संदर्भ में जो बात सर्वाधिक विवादास्पद थी, वह भी उन्मुक्त नारी, जो बिना किसी अपराध बोध के विवाहेत्तर सम्बन्धों को स्वीकारती है तथा इसका सेक्स का खुला चित्रण। चित्तकोबरा ही नही वरन् लगभग सारे कथा साहित्य में ऐसा चित्रण देखने को मिलता है। अश्लीलता के प्रश्न पर मृदुला जी ने कहा है "मैं समझती हूँ कि साहित्य में श्लील–अश्लील महत्त्वपूर्ण मुद्दा है ही नही" 'चित्तकोबरा' के एक दृश्य को लेकर बावेला मच गया, जिससे मन और शरीर का द्वैत और संभोग में नारी का सहभागी न होना दिखाया गया था। इस प्रकार आधुनिक जीवन–पद्धति तथा परम्परा से विमुक्त परिवेश में परम्परागत पारिवारिक सम्बन्धों में इतना अधिक बिखराव आ चुका है कि हम इसे विघटन का नाम दे सकते हैं। 'क्त पर दस्तक' समागम, कितनी कैदे, 'चित्तकोबरा'

रूकावट, उसके हिस्से की धूप, कठगुलाब, 'मैं और मैं' डेफोडिल जल रहे हैं, दो एक फूल, हरी बिन्दी, वंशज, झुलती कुर्सी, मीरा नाची आदि उपन्यासों में तथा कहानियों में नारी अस्मिता की प्रत्येक बात को लेखिका ने नये परम्परागत सांस्कृतिक अवदान सामने आये। जिस समाज में औरत की हर बीमारी का इलाज शादी हो, अकेले हो पाने की चाह आना उसकी बीमारियों को लाइलाज बनाना है।"

अध्ययन का उद्देश्य

1. सांस्कृतिक बोध विषय पर महिला कथाकारों का योगदान
2. मृदुला गर्ग के उपन्यासों एवं कहानियों में सांस्कृतिक बोध
3. सांस्कृतिक सरोकार
4. ग्रामीण नारी और सांस्कृतिक सरोकार
5. शहरी स्त्री और सांस्कृतिक सरोकार
6. सांस्कृतिक सरोकार व समाज

"मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श संस्कृति–बोध" विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर समकालीन परिवेश में नारी अस्मिता की लड़ाई में नारी आर्थिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष की व्यवस्था से पीडित रहकर आर्थिक स्वतंत्रता चाहती है। लेखिका का स्त्रीवादी धारणा है कि "परिवार हमें साख ही नहीं जड़ भी देता है।"

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श व संस्कृतिबोध अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा प्रमुख है। प्रस्तुत शोध में स्त्री विमर्श व संस्कृति बोध का अर्थ, स्वरूप विकास के विमित्त आयामों तथा भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा परिभाषाएँ दी है तथा उनके मतों की विस्तृत चर्चा की है। स्त्री विमर्श बोध लेखन की चर्चा की है कि प्रस्तुत लेखन कब प्रारम्भ हुआ विकास कब हुआ। साथ ही स्त्री लेखन का आधुनिक स्वरूप व उसमें परम्परागत दृष्टिकोण व उससे जुड़ी समस्याओं, सांस्कृतिक परिवेश तथा स्त्री समस्याओं की विस्तृत चर्चा की है। अंत में स्त्रीवादी चिन्तकों की अवधारणा, विचारधारा एक तर्क, वितर्कों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। 'ऑगबर्न और निमकॉफ के अनुसार "बच्चों सहित अथवा बच्चों रहित एक पति–पत्नी के या किसी एक पुरूष या स्त्री के अकेले ही बच्चे सहित एक थोड़े बहुत स्थायी संग को परिवार कहते हैं।"

सांस्कृतिक बोध विषय पर महिला कथाकारों का योगदान

हिन्दी लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री विमर्श व सांस्कृतिक बोध विषय पर महिला कथाकारों का योगदान दिया है तथा उनकी रचनाधर्मिता और नारी स्थिति का सम्यक अध्ययन एवं विश्लेषण किया है, जिनमें प्रमुख महिला कथाकारों की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति व नारी मुक्तिआन्दोलन में महिलाकथाकारों की साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन है। सुमहाकुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, महादेवी वर्मा, शिवरानी देवी, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियमवदा, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान और चित्रामुदगल कृष्णा सेवती प्रमृति महिला कथाकारों की कथाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है इन्होंने प्राचीन युग की नारी तथा स्वातन्त्रोत्तर कथा साहित्य में आधुनिक नारी अस्मिता और उसकी रक्षा के लिए पुरूष सत्ता द्वारा किया जाने वाला अनुचित व्यवहार व अनुचित कार्य करने की प्रेरणा उसकी विवशता रही है। हर समाज में बेरोजगारी, बेमारी तथा उच्च वर्ग और निम्नवर्ग में भिन्नता देखने को मिलेगी उसी वर्ग, जाति एवं लिंग भेद को लेकर महिला कथाकारों ने लिखा है। परपुरूषगमन की बात भी इनके साहित्य में है तो परस्त्रीगमन की चर्चा पुरूष सत्ता में विरोध में रहकर स्त्री को पुरूष की अधीनता से मुक्त कराने की कामना इन महिला कथाकारों की कहानियों/उपन्यासों में देखने को मिला है तथाा पश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति तथा विवाह जैसी संस्था को लेकर चर्चा की है।

मृदुला गर्ग व्यष्टि एवं समष्टि में महिला कथाकारों का परिचयात्मक अध्ययनोपरांत उनका जन्म, शिक्षा, विवाह, संस्कार प्रारम्भिक जीवन बचपन एवं पारिवारिक स्थितियों का सम्यक अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में उनको मिलने वाले पुरूषकारों का परिचय दिया है। व्यक्तित्व सादाजीवन उच्च विचार, विवेकानन्द, गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित रही है तथा महादेवी, प्रसाद के व पंत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जूड़ी कृतियों की चर्चा प्रमुख है। रचना सृष्टि की चर्चा करें तो मृदुला गर्ग और उनके साभी उपन्यासों का परिचय एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया है तथा नारी जनित समस्याओं का सिंहावलोकन किया है साथ ही स्त्री पुरूष सम्बन्धों, विवाहपूर्ण सम्बन्धों तथ विवाहेत्तर सम्बन्धों के साथ सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्यों का विश्लेषण कर लेखनी चलाई है। सभी उपन्यासों की अर्न्तवस्तु को कथानक से शैली तक समेटकर लिखा है चरित्रोद्घाटन भी श्रेष्ठ है। मृदुला गर्ग के कथा साहित्य की पर्याप्त आलोचना हुई है। किन्तु वह आधुनिक विचारों वाली महिला जरूर है किन्तु उन्होंने परिवार, समाज व संस्कृति का सम्यक अध्ययन किया है तथा स्वयंनारी, होने के कारण उसकी मनस्थिति को पूर्णरूपेण भली भांति समझने में कोई दिक्कत नहीं आई है। मृदुला की रचनाधर्मिता की चर्चा करें तो विवाह को एक संस्था का रूप देकर संस्कारों व रिश्तों संस्कारों व रिश्तों की मजबूती व पुरूष सत्ता की कलुषित मानसिकता पर करारा व्यंग्य किया है तथा नारी स्वातन्त्रय की मुहिम छेड़ी है।

मृदुला गर्ग के उपन्यासों एवं कहानियों में सांस्कृतिक बोध

संस्कृति का शब्दार्थ एवं भारतीय एवं पाश्चात्य विचारधाराओं की परिभाषाएं तथा विचारात्मक अवधारणाओं का सम्यक अध्ययन किया है। स्त्रीवादी विचारधारा तथा संस्कृति का परस्पर सम्बन्ध एवं रूढ़िवादिता को स्पष्ट परिभाषित किया। साम्प्रदायिक एकता और राष्ट्रीयता की विविध विचारधाराओं का सम्यक विवेचन स्पष्ट परिलक्षित है। भारतीय संस्कृति की विचारधाराओं में जारी की गई आर्थिक विपन्नता एवं सांस्कृतिक परम्पराओं एवं संस्कारों में नारी अस्मिता रक्षा एवं संरक्षण प्रमुख चर्चा के विषय रहे हैं। स्त्री की लोक जीवन से जुड़ी संगतियों, विचारों, त्यौहार, व्रत, दान, धर्म, उत्सव, विवाह तथा विवाहेत्तर संबंधों का सम्यक अध्ययन विवेचन किया है। पारम्परिक नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों ने स्त्री की अस्मिता तथा

उसके द्वारा किये गये संघर्षशील प्रयासों द्वारा ही सफलता अर्जित की है। आज परम्परागत नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है स्त्री पुरूष सम्बन्धों में औपचारिकता है, जिसका कारण निजी स्वार्थ से ओतप्रोत है। मूल्य संक्रमण 21वीं सदी में सर्वाधिक बढ़ता जा रहा है। इसी कारण नारी मर्यादित मार्ग से विचलित होती जा रही है। आज स्त्री नैतिकता अनैतिकता के मार्ग से विचलित हो गई है। इन सभी तथ्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबंध में किया है।

महिला कथाकार मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में संवेदना व शिल्प का विशद विवेचन किया है। शिल्प और कथ्य का गहरा संबंध है। भाषा शैली की दृष्टि से कथा साहित्य का शब्द भण्डार पर्याप्त है। भाषिक संरचना मं तत्सम, तद्भव, देशज्, विदेशी शब्दों का प्रयोग लेखिका ने सम्पूर्ण कथा साहित्य में किया है। भाषा शैली वर्णात्मक विश्लेषणात्मक, संकेतात्मक आदि का प्रयोग किया गया। अन्त में शोध के निष्पक्षों का सार समाहार एवं संभावनाएँ प्रस्तुत की गई है। जिसमें सम्पूर्ण शोध–प्रबंध का सारांश एवं समलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक कथा साहित्य अंग्रेजी, उर्दू, फारसी शब्दावली का प्रयोग बहुताय है जोकि मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में स्पष्ट देखा गया है।

सांस्कृतिक सरोकार

भारतीय संस्कृति में वेद, वेदांग, रामायण, महाभारत, ज्योतिष आदि ग्रन्थों में भारतीय संस्कृति व संस्कारों का विषद विवेचन स्पष्ट परिलक्षित है। संस्कृति संस्कारों से जुड़ी है। भारतीय संस्कृति में नारी का विशिष्ट स्थान है। नारी का आदर आदिकाल से ही होता आ रहा है किंतु वर्तमान में स्थिति विचारणीय है। आज सांस्कृतिक मूल्यों का निरन्तर हृास होता दिखाई पड़ता है। आज नैतिक मूल्यों का लगभग अंत हो गया, परम्परागत संस्कार लुप्त प्रायः हो गये हैं। पश्चिम की अतिभौतिकवादी परम्परा ने भारतीय नारी के अस्तित्व को हिलाकर रख दिया है। आज नारी यौन हिंसा की शिकार हो रही है।

संस्कृति देश व समाज की आत्मा है। इससे उसके उन सब संस्कारों, सम्यक चेष्ठाओं और उपलब्धियों का ज्ञान होता है, जिनके सहारे सामाजिक परिस्थितियों का समाधान सम्यक रूप में हल करता है। भारतीय समाज में महिलाओं की अस्मिता का सम्बन्ध सांस्कृतिक सरोकारों से जुड़े हुए हैं। शानी उस स्थिति में है जहां स्वपन टूट चुकी है। संस्कृति अपूर्ण से पूर्णत्व को ले जाती है। किन्तु शानी तो नैतिकता के बन्धन तोड़कर भी अपूर्ण है, मुक्त यौवन उसे तृप्त नहीं कर पाया। मृदुला जी ने पेशेवर सम्बन्धों को हेय माना है ''समलैगिंक सम्बन्ध छी। मेरे मन ने भर्त्सना की। आप चाहें तो पूर्वाग्रह कर लें या पिछड़ापन, पर यह प्रगतिशीलता ऐसी है, जो अपने को कभी रास नहीं आ पाई।" स्त्री पात्र वैवाहिक जीवन की घुटन से तृषित है, यौन व्यापार की घुटन दम घोटती है। अधिकारों की बात करने वाली नारी अपने कर्तव्यों से पलायन करती दिखाई दे रही है। सामाजिक व सांस्कृतिक परम्पराओं को तोड़कर स्वच्छन्दता चाहती है। अवकाश, उसके हिस्से की धूप, चित्तकोबरा आदि में स्पष्ट देखा जा सकता है।

ग्रामीण नारी और सांस्कृतिक सरोकार

भारतीय संस्कृति का मूलाधार ग्रामीण क्षेत्र है जहां परस्पर एक दूसरे के सहयोग को तत्पर रहते है। गांव की खेती, वृक्ष, तीज, त्यौहार लोकजीवन की परम्पराओं का विशेष महत्व है, इस भटके हुए नारीवाद ने सांस्कृतिक मूल्यों को तो आहत किया ही है, साथ ही साथ मानसिक दुर्बलता, हीनता, कुण्ठा, अस्थिरता और मानसिक विकृति को आमंत्रित करके परिवार को विघटन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। भारतीय संस्कृति को सर्वथा त्याज्य मानने वाली, यौन उच्छश्रंखला के अन्धानुकरण में तल्लीन, आज की स्त्री अपने अस्तित्व को पहचानने। अस्मिता की खोज आत्मोत्थान द्वारा ही संभव है। नारी मुक्ति की दौड़ में भागती नारी को मंजिल का ही पता नहीं है।

नारी अस्मिता के अन्तर्गत मृदुला जी ने भारतीय संस्कृति के रीति–रिवाजों, नृत्य, कला, संगीत, विवाह प्रक्रिया में ग्रामीण स्त्रियों द्वारा विवाह एवम् त्यौहारों में गाये जाने वाले गीतों से प्रेम झलकता है। एक और अजनबी में शानी विवाह के अवसर स्त्रियां सुहाग गीत गाती है। मीरा नाची में लड़की की रूचि नृत्य में है, उनके नारी पात्र अनुभूति के गहन क्षणों में माानों भारतीय संस्कृति की लहर सरोबार हो उठती है। अशोक झा ने अपने वैज्ञानिक लेख सबल स्त्री का शास्त्र में लिखते हैं कि शारीरिक संरचना व जीव वैज्ञानिक वास्तविकताओं की दृष्टि से महिला किसी भी सूरत में पुरूषों से कम नहीं है। उनकी शारीरिक क्षमताऐं पुरूषों से कतई कमतर नहीं है। और इस आधार पर उन्हें 'अन्या; नहीं मान सकते। इनमें सबसे बड़ी बात यह है कि विज्ञान ऐसा कर रहा है, जिसके परिणामों को यह पुरूष प्रधान समाज पहले ही अपनी स्वीकृति दे चुका है।"

'उसकी कराह' कहानी की नायिका को दिल का ट्यूमर है। वह अपनी अंतिम घड़िया गिन रही है। पति सुमित देखभाल के लिए मां को बुलाता है किन्तु वह मना कर देती है क्योंकि वह सास को बुरा भला कहती है। वह साफ शब्दों में कह देती है कि सास को बुलाने की कोई जरूरत नहीं है ''जानते नहीं क्या ? आते ही कहना शुरू कर देगी, इसे कुछ नहीं हुआ सब बहाना है। पिछली बार जब बेहोश होकर चूल्हे के पास गिर पड़ी थी, तब क्या हुआ ?" प्रस्तुत गद्यांश में भारतीय परम्परा के अनुसार सास बहु का सम्मान करने की है यहां तो बहु ही सास के प्रति अविष्वसनीयता दिखा रही है। कथाकार ने स्त्री मुक्ति की जो कल्पना की है वहां सांस्कृतिक मूल्यों के गिरते स्तर को ग्रामीण स्त्रियों की मनोदशा को प्रकट किया है। हमारे देश में समाज सर्वोपरि है, परिवार प्रमुख और व्यक्ति गौण। शादी भी होती है, तो व्यक्ति से नहीं परिवार से। स्त्री पत्नी नहीं बहु बनकर प्रवेश करती है।" आज की उन्मुक्त नारी बराबर का पुरूष चाहती है। शारदा बेन जैसी स्त्रियों को अस्मिता का बोध है। वह मैं ही थी की नायिका के लिए आर्थिक स्वतन्त्रता विलास की वस्तु है। वह कमाये हुए पैसो को शादी की मौज मस्ती में उडा देती है और विवाहोपरांत आर्थिक संकट का सामना

करती है। इस प्रकार ग्रामीण संस्कृति में व्याप्त विषमता व आर्थिक संकट से जूझती नारी की कथा व्यक्त की है जो मानवीय रिश्तों व नैतिक मूल्यों का पतन होने का साक्षात् संकेत देती है।

शहरी स्त्री और सांस्कृतिक सरोकार

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति की झलक ग्रामीण व शहरी संस्कृति की विविध छटाएं स्पष्ट परिलक्षित है। शहरी परिवेश में आधुनिक नारी पुरूष की भांति स्वच्छन्द जीवन जीने की राह पर उतारू है। ग्रामीण जनजीवन में परम्पराओं की पालना करते हुए जीवन जीने तथा सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू को समझती है। 'रूकावट' कहानी में आधुनिक शहरी नारी की चारित्रिक विशेषता है जो पति से दिखावे का प्रेम तथा दूसरे व्यक्ति के प्रति समर्पण प्रेम भाव है। 'दो एक फूल' शीर्षक कहानी में शान्तमा के पति के परस्त्रीगामी के रूप को चित्रित किया है। जिससे दोनों को सिफ्लिक्स रोग होता है। डॉ. मालती की चिंता होना भी स्वाभाविक है। ''वह जानती थी, कि सिफलिक्स का इलाज सीधा और सहज है। बशर्ते वह दुबारा न हो। इसके लिए शान्तम्मा और उसके पति का इलाज ही नहीं करना होगा, वह भी देखना होगा कि पति शान्तम्मा को दुबारा दूषित न करे, यानि स्वयं भी दुबारा दूषित न हो केवल डॉ. मालती शर्मा की हिदायतें उसे नहीं बचा सकती।" यहां लेखिका ने स्त्री यौन सुचित को छोड़कर स्वतन्त्र उन्मुक्त यौन तुष्टि करने की बात कही है तथा आधुनिक नारी की विषम परिस्थिति को तनाव मुक्त करने की बात कही है।

भारतीय संस्कृति को सदैव त्याज्य मानने वाली यौन–उच्श्रंखलता के अन्धानुकरण में व्यस्त, आधुनिक नारी को यह अवगत होना चाहिए, आज का युग विज्ञान का युग है तथा मानव गतिविधियों में विज्ञान का विशिष्ट योगदान है। स्वतन्त्रता की दौड़ में नारी नशे में धुत्त होकर गतिमान हो रही है, विवेकहीन होकर राह से विचलित होती जा रही है।

भौतिक मूल्यों को नकारती लेखिका अमातृतव की संभावना करती है, यह प्रक्रिया एक बोझ से कम नहीं है। विवाहेत्तर सम्बन्ध एक स्त्री के लिए अपेक्षाकृत सहज और सरल होते है। इस सन्दर्भ में प्रभा खेतान कहती है। ''समाज जितनी जल्दी एक स्त्री को (अविवाहित) शक की निगाह से देखता है, उतना शक विवाहिता पर नहीं करता। मेरी मां कहा करती थी कि मेरी बेटी, ब्याह कर ले, लाल घाघरे में सारे दाग छुप जाते हैं। मगर सफेद आंचल में एक भी दाग भद्दा लगता है।"

'उसके हिस्से की धूप' की मनीषा दुबारा विवाह करने की भूल कर बैठती है, वह बिना तलाक ही पति के होते हुए स्वच्छन्द विचरण करती है। लेखिका ने विवाह को शोषण का गढ़ मानती है। 'चित्त कोबरा' में स्पष्ट कहा है कि 'प्रेम हीन शरीर–सम्बन्ध जो भारतीय विवाह–पद्धति की स्वाभाविक स्थिति है, भयानक आत्मपीडन के अलावा कुछ नहीं है। क्षणसुख में परिवर्तन होता रहता है तथा नये–नये रिश्ते बनकर टूटते रहते हैं। चारों पुरूषार्थों का महत्व भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। हिन्दू धर्म में यौन तृप्ति की अपेक्षा धर्म और कर्तव्य पर विशेष जोर देता है। लेखिका ने सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से ओत–प्रोत नारी संवेदना को स्पष्ट किया है।

'साहेब बीबी और गुलाम' नामक फिल्म में पति का उन्मुक्त आचरण पत्नी को तिल–तिल मरने को विवश करता है। गर्ग जी के पात्र स्त्री जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते वरन् बलात्कार करने में अग्रणी रहते है। 'कठ गुलाब' की असीमा पूर्वाग्रह की शिकार पुरूष को 'हरामी' तक कह देती है। कृष्णा सोबती इस सन्दर्भ में कहती है 'ऐ लड़की मैं देखें' और नारी ..... ?

उसकी दृष्ट है पृथ्वी। वह पराशक्ति बनी पुरूष के आगे–पीछे व्याप्त हो जाती है। समेट लेती है, उसे अपने घेरे में।" इस प्रकार लेखिका ने भारतीय संस्कृति में पुरूष की उस वृत्ति के चित्रण को अछूता छोड़ दिया है, जिसमें वह यथार्थ जीवन की कटुताओं से जूझकर थककर पत्नी के आंचल की छाया में खो जाना चाहता है। नारी पृथ्वी सदृष्य महिमा मण्डित है प्रकृति ने उसे ही कोख प्रदान कर पुर्नसृजन का वरदान दिया है। नारी अस्मिता के अन्तर्गत गर्ग ने भारतीय संस्कृति के रीति–रिवाजों, नृत्यकला, संगीत विवाह–प्रक्रिया का भी चित्रण किया है, जो संस्कृति के प्रति उनकी रूचि को व्यक्त करता है। 'एक और अजनबी' के विवाह समय सुहाग गीत गाये जाते हैं, ऐसे ही 'मीरा नाची' में संस्कृति की झलक लय संगीत से ओत–प्रोत रहती है। नारी सौन्दर्य भी पर्याप्त हुआ है। बिन्दी, साडी, लिपिस्टिक, चूड़ी आदि श्रंगारिक प्रसाधनों का प्रयोग बहुतायत मात्रा में हुआ है। अतः लेखन में नारी–पुरूष सम्बन्धों का परम्परा से हटकर चित्रण करना संस्कृति का अवमूल्यन है। आज सांस्कृतिक, आर्थिक एवम् सामाजिक परिवर्तनों से नारी विषयक विपन्नता आर्थिक रूप से सम्पन्न वर्ग की और अग्रसर हो रही है।

सांस्कृतिक सरोकार व समाज

सांस्कृतिक सरोकार का सम्बन्ध समाज व संस्कृति से है। परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। समाज में जीवन चर्या का साक्षात् स्वरूप, परम्पराऐं, संस्कार आचार–विचार, रूढ़ियां, पहनावा, लोकजीवन से जुड़ी धार्मिक मान्यताऐं आर्थिक परिस्थितियां ये सब संस्कृति से जुड़ी हुई है। स्त्री की पहचान समाज व परिवार द्वारा ही संभव है। पुरातन काल से आज तक स्त्री के विविध रूपों की चर्चा हुई है। जिसमें पत्नी–पुत्री, सास, मां आदि रूपों में समाज को प्रेरणा देती हुई निरन्तर गतिशील रही है।

वहीं पुरूष सत्ता ने उसे केवल भोग्या मानकर उसका निरन्तर शोषण होता आ रहा है। वेद–पुराणों में नारी की गरिमा को निरन्तर बढ़ाने की अपेक्षा ह्रास हो रहा है। आज की पुरूषवादी मनुवादी धारणा ने उसे क्रूर, हिसंक, बलात्कारी व ओझी सोचवाला व्यक्ति बना दिया है। आज की नारी घर परिवार व बाहर असुरक्षित है। तथा कोर्ट के निर्णय में स्त्री को विवाहेत्तर सम्बन्धों को लेकर यह स्पष्ट कर दिया की शादी–शुदा के साथ शारीरिक सम्बन्ध अपराध नहीं है। इससे नारी अस्मिता की रक्षा करना और भी कठिन हो जायेगा। इससे स्त्री शुचिता की संभावनाऐं कम होंगी तथा पुरूष की कुत्सित अवधारणा को ताकत मिलेगी तथा स्त्री का मनोबल गिरता जायेगा स्वयं को हीन मानने लगेगी।

निष्कर्ष

हिन्दी लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री विमर्श व सांस्कृतिक बोध विषय पर महिला कथाकारों का योगदान दिया है तथा उनकी रचनाधर्मिता और नारी स्थिति का सम्यक अध्ययन एवं विश्लेषण किया है, जिनमें प्रमुख महिला कथाकारों की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति व नारी मुक्तिआन्दोलन में महिलाकथाकारों की साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन है। सुमहाकुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, महादेवी वर्मा, शिवरानी देवी, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियमवदा, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, प्रमा खेतान और चित्रामुदगल कृष्णा सेवती प्रमृति महिला कथाकारों की कथाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है इन्होंने प्राचीन युग की नारी तथा स्वातन्त्रोत्तर कथा साहित्य में आधुनिक नारी अस्मिता और उसकी रक्षा के लिए पुरूष सत्ता द्वारा किया जाने वाला अनुचित व्यवहार व अनुचित कार्य करने की प्रेरणा उसकी विवशता रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

मृदुला गर्ग : कठगुलाब : 1996, पृ. 17
चितकोबरा : 1979, पृ. 48
समागम : 1996, पृ. 76, पृ. 108
वैचारिक संकलन : अप्रेल 1998, पृ. 48
मृदुला गर्ग : रंग – ढंग : 1995, पृ. 31
मृदुला गर्ग : चुकते नहीं सवाल : 1999, पृ. 13
मृदुला गर्ग : रंग में ढंग : 1995, पृ. 28
डब्ल्यू.एफ. ऑगबर्न एण्ड एम.एफ. निमकॉफ : ए हैण्ड बुक ऑफ सोशियलोजी, पृ. 49
भारतीय नारी : दषा और दिषा : आषारानी बोहरा : 1983, पृ. 167
सम्पादकीय : हंस, मार्च 2001, पृ. 12, पृ. 8
भारतीय समाज और संस्कृति : रविन्द्र नाथ मुकर्जी : 1997, पृ. 450
टुकड़ा–टुकड़ा आदमी : मृदुला गर्ग : 1976, पृ. 64
ऐ लड़की : कृष्णा सोबती 1991, पृ. 31